न समारया अर्स को, न किए नूर मन्दिर।
न किए हौज जोए को, न पर्वत बन जानवर।। ८१ ।।

परमधाम और अक्षरधाम को किसी ने बनाया या संवारा नहीं है। इसी तरह से हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, पहाड़, वन और जानवरों को भी किसी ने बनाया या संवारा नहीं है।

न समारी जिमी जल को, न आकास चांद सूर।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर।। ८२ ।।

जमीन, जल, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, हवा, अग्नि सभी श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूर हैं। उन्हें किसी ने बनाया नहीं है।

है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात।। ८३ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से ही अक्षर ब्रह्म तथा सभी फरिश्ते, रूहें, बड़ी रूह श्यामाजी हैं और यह सब मिलकर हक जात (श्री राजजी महाराज के अंग) कहलाते हैं।

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल।। ८४ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कोई नहीं है। सबके अन्दर श्री राजजी महाराज की ही कहनी, करनी और रहनी का नूर है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो अरवा अर्स अजीम।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम।। ८५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की रूहें हो। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को लेकर भर-भर कर पिओ।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। १७८७ ।।

खिलवत में हांसी फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार।
उतरी लैलत-कदर में, खेल देखन तीन तकरार।। १ ।।

परमधाम के अन्दर देखो। मूल-मिलावे में बारह हजार रूहें बैठी हैं। यह रूहें माया के भवसागर को देखने के वास्ते तीन बार माया में उतरी हैं।

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम।
तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही मना किया और हंसी के वास्ते ही हुकम के द्वारा रूहों के दिल में खेल की चाह पैदा की। रूहों के दिल में खेल देखने की चाह उपजाई तो रूहों ने यह खेल मांगा।

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित।
आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत।। ३ ।।

अब प्रथम भोम में देखो जहां श्री राजजी महाराज के चरणों में सखियां मिलकर बैठी हैं और आप श्री राजजी महाराज रूहों को परमधाम में कृपा करके खेल दिखला रहे हैं।

साहेब बैठे तखत पर, खेलावत कर प्यार।
ऐसी हांसी फरामोसीय की, कबूं देखी ना बेसुमार।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज सिंहासन पर बैठे हैं और प्यार से फरामोशी और हंसी का खेल जिसे कभी नहीं देखा था, दिखा रहे हैं।

उठ के गिर गिर पड़सी, फरामोसी हांसी के खेल।
ए जो तीनों तकरार, हकें देखाए माहें लैल।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस लैल तुल कदर की रात्रि के तीनों भागों में ऐसा बेसुधी का खेल दिखाया कि जागने पर बेहद की खुशी में एक दूसरे पर गिरेंगे।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें यों कह्या उतरते।
जो केहेता हों तुमको, जिन भूलो खेल में ए।। ६ ।।

खेल में उतरते समय श्री राजजी महाराज ने रूहों से कहा कि जो मैं तुम से कहता हूं खेल में जाकर मत भूलना, ऐसी रूहों के सुख का कैसे बयान करूं?

क्यों कहूं सुख रूहन के, हक इन विध हांसी करत।
आप देत भुलाएके, आपै जगावत।। ७ ।।

श्री राजजी महाराज स्वयं भुलाते हैं और स्वयं ही जगाते हैं। ऐसे इन रूहों के सुख हैं जिनका वर्णन कैसे करूं, इनके साथ श्री राजजी महाराज इस तरह की हंसी करते हैं।

क्यों कहूं सुख रूहन के, हकें कौल से किए हुसियार।
दिल नींद दे ऊपर जगावत, करने हांसी अपार।। ८ ।।

इन रूहों के सुख का कैसे बयान करूं जिनको श्री राजजी महाराज ने अपने वचनों से पहले ही होशियार कर दिया था। रूहों के दिलों में फरामोशी की नींद देकर ऊपर से हंसी करने के वास्ते जगा रहे हैं।

खेल किया हांसी वास्ते, वास्ते हांसी किए फरामोस।
वास्ते हांसी ऊपर पुकारहीं, वास्ते हांसी न आवत होस।। ९ ।।

हंसी करने के वास्ते ही खेल बनाया और हंसी के वास्ते ही फरामोशी दी। हंसी के वास्ते ही ऊपर से पुकार रहे हैं और हंसी के वास्ते ही रूहों को होश नहीं आने देते।

आप फरामोसी ऐसी दई, जो भूलियां आप हक घर।
ऊपर कई विध केहे केहे थके, पर जाग न सके क्योंए कर।। १० ।।

श्री राजजी महाराज ने ऐसी फरामोशी दी कि रूहें अपने आपको, अपने घर को तथा श्री राजजी महाराज को भूल गईं। ऊपर से कई तरह से जगाने के प्रयत्न करते हैं, पर इस तरह से कभी भी रूहें जाग नहीं सकतीं।

ऐसी दारू ल्याए रूहअल्ला, जासों मुरदा जीवता होए।
पर फरामोसी इन हांसी की, उठ न सके कोए।। ११ ।।

श्यामा महारानी जागृत बुद्धि के ज्ञान की ऐसी दवा लेकर आई हैं जिससे मुरदा जीवित हो सकता है। पर रूहों के ऊपर हंसी के वास्ते ऐसी फरामोशी का परदा कर रखा है कि किसी की आत्मा जागृत नहीं हो सकती।

इन विध हांसी न जाए कही, कई कोट विधों जगावत।
कई दारू उपाय कर कर थके, दिल ठौर क्योंए न आवत।। १२ ।।

इस तरह की फरामोशी की हंसी का क्या कहूं? ऊपर से धनी कई करोड़ों तरीकों से जगा भी रहे हैं। जागृत बुद्धि का ज्ञान भी देकर जगाया, परन्तु रूहों के दिलों से फरामोशी जाती नहीं है।

हांसी होसी अति बड़ी, ए खेल किया वास्ते इन।
औलिया लिल्ला दोस्त कहावहीं, पर बल न चल्या इत किन।। १३ ।।

यह हंसी के वास्ते ही खेल बनाया है और बहुत बड़ी हांसी (हंसी) होगी। यह श्री राजजी महाराज के प्यारे दोस्त मोमिन कहलाते हैं, पर इस फरामोशी के आगे यहां किसी की ताकत नहीं चलती।

हांसी इसही बात की, फेर फेर होसी ए।
उठ उठ गिर गिर पड़सी, बखत जागने के।। १४ ।।

जागने के समय में इसी बात की हंसी होनी है और रूहें उठ-उठकर हंसी के मारे गिरेंगी। लोट-पोट हो जाएंगी।

आपन को फरामोस की, नींद आई निहायत।
अर्स अजीम में कूदते, कछू चल्या न हक सों इत।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे रूहो! हमें निश्चित ही फरामोशी ज्यादा ही आ गई है। हम तो परमधाम में खूब उछलते-कूदते थे, पर यहां इस संसार में श्री राजजी महाराज के आगे हमारा कुछ वश चलता नहीं है।

अरवाहें हमेसा अर्स की, कहावें खास उमत।
पर कछू बल चल्या नहीं, ना तो रखते हक निसबत।। १६ ।।

परमधाम की हम रूहें श्री राजजी महाराज की खास उम्मत (अंग) कहलाती हैं। श्री राजजी महाराज की अंगना कहलाकर भी अपनी कुछ ताकत नहीं चलती।

हंसते हंसते उठसी, ऐसी हुई न होसी कब।
हक हंससी आपन पर, ऐसी हुई जो हांसी अब।। १७ ।।

खेल के बाद हम हंसते-हंसते उठेंगे और श्री राजजी महाराज ऐसी हंसी हंसेंगे ऐसी हंसी न कभी हुई थी ना कभी होगी जैसी इस बार होगी।

कई हांसी खुसाली अर्स में, करी मिनो मिने रूहन।
पर ए हांसी ऐसी होएसी, जो हुई नहीं कोई दिन।। १८ ।।

परमधाम में रूहें आपस में कई तरह से हंसी का खेल करती थीं, पर यह हंसी ऐसी होगी जो कभी नहीं हुई।

ऐते दिन हांसी खुसाली, करी रूहों दिल चाही जे।
पर ए हांसी हक दिल चाही, ताथे बड़ी हांसी हुई ए।। १९ ।।

इतने दिन तक रूहों ने अपनी दिल चाही हंसी का आनन्द लिया है पर अबकी बार यह हंसी श्री राजजी महाराज ने अपने दिल की चाहना से की है, इसलिए सबसे बड़ी हंसी है।

रूह अपनी इन मेले से, जुदी करो जिन खिन।
न्यारी निमख न होए सके, जो होए अरवा मोमिन।। २० ।।

इसलिए, हे रूहो! अपने मूल-मिलावा से अपने चित्त को एक क्षण के लिए भी अलग मत करो। मोमिनों की सुरता एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हो सकती।

इन ठौर ए मिलावा, जिन जुदी जाने आप।
इतहीं तेरी कयामत, याही ठौर मिलाप।। २१ ।।

इस मूल-मिलावा में ही हम बैठे हैं। अपने आपको अलग मत समझो। इसी मूल-मिलावा में श्री राजजी के चरणों तले ही तेरा जीवन, कयामत और मिलन है।

हक हादी इतहीं, इतहीं असलू तन।
खोल आंखें इत रूह की, एह तेरा बका वतन।। २२ ।।

यहीं पर श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और तुम्हारे मूल तन हैं। तुम रूह की आंखें खोलकर देखो तो मूल-मिलावा ही तुम्हारा अखण्ड घर है।

ए ठौर नजर में लीजिए, लगने न दीजे पल।
कौल फैल या हाल सों, देख हक हांसी असल।। २३ ।।

इस मूल-मिलावा को अपनी नजरों में ले लो और एक पल के लिए भी अपनी आंखों से अलग मत करो। अपनी कहनी, करनी और रहनी से श्री राजजी महाराज की हांसी (हंसी) को देखो।

इत देख फेर फेर तूं, अपनी रूह की आंखां खोल।
कर कुरबानी आपको, आए पोहोंच्या कयामत कौल।। २४ ।।

अपनी रूह की आंखें खोलकर बार-बार तुम इस मूल-मिलावे को देखो। ब्रह्माण्ड के अखण्ड होने का समय आ गया है, इसलिए अपने आपको कुर्बान कर दो।

ए हांसी करी हक ने, फरामोसी की दे।
क्यों न विचारें आपन, ए तरंग इस्क के।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम पर हंसने के वास्ते ही फरामोशी दी है। तो फिर अपने इश्क की लहर पर हम विचार क्यों न करें?

याथें देखो हक इस्क, हेत प्रीत मेहेरबान।
ए हकें करी ऐसी हांसियां, खोल आंखें दिल आन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज का इश्क देखो जो इतने हेत, प्रीति और मेहर से भरा है। श्री राजजी महाराज ने ऐसी हंसी की है। तुम अपनी रूह की आंखें खोलकर देखो।

ऐसा हेत देख्या हक का, तो भी लगे न कलेजे घाए।
ऐसी रब रमूजें सुन के, हाए हाए उड़त नहीं अरवाए।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज का ऐसा प्यार देखकर भी हाय! हाय! अभी भी कलेजे में घाव नहीं लगे। श्री राजजी महाराज की इशारतें सुनकर भी हाय! हाय! यह अरवाहें (रूहें) निकलती क्यों नहीं?

ए सुख जरा याद न आवहीं, याद न एक एहेसान।
हक देत याद कई विध सों, हाए हाए ऐसी लगी नींद निदान।।२८।।

धनी के इन सुखों की और इन एहसानों की जरा भी चाह नहीं आती है। श्री राजजी महाराज तुम्हें कई तरह से याद दिलाते हैं। हाय! हाय! तुम्हें फिर भी ऐसी फरामोशी की नींद कैसे लगी है?

ना तो ऐसी मेहेर इस्क सों, हक करत आपन सों।
जगाए के पेहेचान सब दई, हाए हाए आवत ना होस मों।। २९ ।।

नहीं तो श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर इतनी कृपा अपने प्यार से करते? जगाकर घर की सब पहचान देते हैं। हाय! हाय! हम फिर भी होश में नहीं आते।

महामत कहे ए मोमिनों, ए देखो हक की मेहेर।
जो एक एहेसान हक का लीजिए, तो चौदे तबक लगे जेहेर।। ३० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज की मेहर को देखो। यदि उनकी एक मेहर को भी समझ लें तो चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड जहर के समान लगेगा।

|| प्रकरण || ३३ || चौपाई || १८१७ ||

परिकरमा नजीक अर्स के

बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे।
खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए।। १ ।।

पहली भोम के मेहराब और झरोखे जो दीवार में शोभा देते हैं, उनकी शोभा कैसे कहूं?

गिरदवाए मेहेराव झरोखे, फेर देखिए तरफ चार।
इन मुख खूबी तो कहूं, जो होवे कहूं सुमार।। २ ।।

रंग महल के चारों तरफ मेहराब और झरोखे आए हैं। इनकी शोभा बेशुमार है, इसलिए इस मुख से कैसे वर्णन करूं?

बेसुमार जो फेर फेर कहिए, तो आवत नहीं हिरदे।
तो सब्द में ल्यावत, ज्यों दिल आवे मोमिनों के।। ३ ।।

बार-बार बेशुमार कहूं, यह बात समझ में आती नहीं, इसलिए इसको सीमा में लाकर कह रही हूं ताकि मोमिनों की समझ में आ जाए।

पार न कहूं अर्स का, सो कह्या बीच दिल मोमिन।
ए विचार कर देखिए बका, सो ल्याए बीच दिल इन।। ४ ।।

परमधाम का पारावार नहीं है। उसकी शोभा मोमिनों के दिल में बताई है। यह विचार करके अखण्ड परमधाम देखो जो मोमिनों के दिलों में है।

हिसाब बीच ल्याए बिना, हक आवें नहीं दिल माहें।
हक देत लदुन्नी मेहेर कर, हक अर्स आवे बीच जुबांए।। ५ ।।

परमधाम के ठाट-बाट का वर्णन किए बिना श्री राजजी महाराज की याद दिल में नहीं आती। श्री राजजी महाराज जब कृपा करके जागृत बुद्धि का ज्ञान देते हैं तभी यहां की जबान परमधाम और श्री राजजी महाराज की साहिबी का वर्णन कर पाती है।